राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना (फेज–2)

JICA द्वारा ऋण एवं राज्य सरकार की वित्तीय सहायता से संचालित

संवाद पत्र

अंक - 6 अप्रेल से जून 2017

परियोजना अंतर्गत वृक्षारोपण का अंतिम चरण

परियोजना के अन्तर्गत कराया जाने वाला वृक्षारोपण कार्य वर्ष 2017–18 में अपने अन्तिम चरण में पहुंच चुका है। परियोजना में वृक्षारोपण का कुल लक्ष्य 83650 है0 है, जिसमें से वर्ष 2016–17 की समाप्ति तक 77918 है0 में वृक्षारोपण कार्य विभिन्न मॉडल अनुसार कराया जा चुका है।

वर्ष 2017–18 में कुल 5758 है0 में वृक्षारोपण किया जायेगा तथा विभिन्न मॉडल अनुसार कुल 14.40 लाख वृक्ष लगाये जायेंगे। मॉडल अनुसार प्रस्तावित वृक्षारोपण निम्न है :

क्रं.संख्या	वृक्षारोपण मॉडल	प्रस्तावित लक्ष्य (है0)
1	CSP- D	173
2	CSP- M	41
3	SDS	150
4	SP	1377
5	BP	-
6	RDF I	252
7	RDF II	2940
8	ANR	700
9	PEO	50
10	FWP	75
	कुल योग	**5758**

मानसून के आगमन के साथ ही पौधारोपण गतिविधियों की शुरुआत हो गई है। इसके लिए विभागीय पौधशालाओं में उच्च कोटि के पौधे तैयार कर लिये गये है तथा वृक्षारोपण स्थलों के बाड़बंदी का कार्य भी लगभग पूर्ण हो चूका है। भूमि एवं मृदा संरक्षण कार्यों के तहत आवश्यकता अनुसार चेक डैम निर्माण, कंटूर बंडिंग आदि कार्यों का सम्पादन भी किया जा चुका है।

परियोजना निदेशक की कलम से ...

चालू वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में समितियों एवं स्वयं सहायता समूहों के सशक्तिकरण करने के प्रयासों ने आशातीत परिणाम दिए हैं। प्राथमिकता यही है कि जो भी भौतिक लक्ष्य शेष रह गए हैं, उन्हें जल्दी से जल्दी पूर्ण गुणवत्ता के साथ प्राप्त कर लिया जाये। इसीलिए वर्ष की शुरुआत में ही सभी मंडल प्रबंधन इकाइयों को चालू वित्तीय वर्ष के लिए सभी घटकों में लक्ष्यों का निर्धारण कर बजट का आवंटन कर दिया गया है।

मानसून के आगमन के साथ ही वृक्षारोपण गतिविधियों में तेजी आ गई है और परियोजना के वृक्षारोपण लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लिया जायेगा। शेष लक्ष्यों की प्राप्ति भी योजनाबद्ध तरीके से की जानी है।

आशा करता हूं कि सभी परियोजना गतिविधियों का क्रियान्वयन सुगमता से होगा एवं लक्षित मुकाम हासिल करनें में सफलता मिलेगी।

– **आर.के. गोयल** (आई.एफ.एस).
परियोजना निदेशक

मासिक समीक्षा बैठकों का आयोजन

प्रत्येक वित्तीय वर्ष के प्रारंभ में परियोजना निदेशालय द्वारा सभी मंडल प्रबंधन इकाईयों को पैकेज वार कार्यों के लक्ष्य आवंटित कर प्रगति सुनिश्चित किये जाने हेतु निर्देशित किया जाता है। मंडल प्रबंधन इकाईयों द्वारा इन लक्ष्यों को क्षेत्र प्रबंधन इकाईयों तथा कार्यरत स्वयं सेवी संस्था से साझा कर परियोजना गतिविधियों का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाता है। समयवार हर स्तर पर प्रगति की समीक्षा की जाती है और आवश्यकता अनुसार निर्णय लिए जाते हैं। परियोजना निदेशालय द्वारा सभी मंडल प्रबंधन इकाईयों को मासिक प्रगति समीक्षा बैठक आयोजित करने के भी निर्देश हैं ताकि इन बैठकों के दौरान पैकेज वार भौतिक एवं वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति पर चर्चा की जा सके।

वित्तीय वर्ष 2016–17 की समाप्ति तक परियोजना के सभी घटकों में 90 प्रतिशत या अधिक लक्ष्यों की प्राप्ति हो चुकी है। वर्तमान वित्तीय वर्ष की शुरुआत के साथ ही परियोजना का अंतिम चरण प्रारम्भ हो चुका है। जिसके दौरान परियोजना के द्वारा स्थानिक संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण एवं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित रहेगा। साथ ही मासिक समीक्षा बैठकों में भी स्वयं सहायता समूह एवं आय सृजन गतिविधियों की समीक्षा पर ख़ास ध्यान देने के उद्देश्य से परियोजना निदेशालय द्वारा एक समयबद्ध कार्य योजना की रूपरेखा तैयार की गई है। इस योजना को सुलभ बनाने एवं इसका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करवाने के लिए इन बैठकों में निदेशालय से प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

प्रथम तिमाही में माह मई एवं जून में लगभग सभी मंडल प्रबंधन इकाईयों में आयोजित मासिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों, रेंज ऑफिसर्स तथा स्वयंसेवी संस्था प्रतिनिधियों के साथ चर्चा में निदेशालय प्रतिनिधियों ने कार्य योजना की समयबद्धता सुनिश्चित कराने पर जोर दिया। इस कार्य योजना में समूहों के गठन, उनकी गुणवत्ता, बैंक खातों को खुलवाना, समूहों की ग्रेडिंग, उनके द्वारा आय सृजन गतिविधियों के चयन, उनकी ट्रेनिंग आदि से सम्बंधित गतिविधियों के क्रियान्वयन को प्रस्तावित समय सीमा के अंदर पूर्ण गुणवत्ता के साथ पूरा करने पर जोर दिया गया है जिससे परियोजना समाप्ति तक सभी समूहों द्वारा रोजगार सृजन कराया जा सके।

सफलता की कहानियाँ

सूखी सब्जियां संग्रहण एवं बिक्री

मंडल प्रबंधन इकाई जोधपुर के अंतर्गत फलोदी क्षेत्र प्रबंधन इकाई में स्थित ग्राम पालीना में अधिकांश निवासी कृषि एवं पशुपालन कार्य से जुड़े हुए हैं। गाँव की महिलाएं घरेलु कामकाज के साथ कृषि कार्य में हाथ बटाती हैं। साथ ही खाली समय में मौसमी सब्जियों जैसे कैर, सांगरी, ग्वारफली, काचरी, टिंडा, कुमठ आदि को संग्रहीत कर अपने उपयोग के लिए रखने के उपरान्त बची सब्जियों को स्थानीय बाजार में बेचने का कार्य करती हैं। इस प्रकार ये महिलाएं खाली समय में थोड़ी बहुत आमदनी अर्जित कर घर खर्च में सहयोग करती हैं। महिलाओं द्वारा सब्जियों का संग्रहण कर उन्हें सुखाने एवं बाद में उपयोग योग्य बनाने की अलग अलग विधियां हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं।

हर महिला द्वारा स्थानीय बाजार में बेची जानी वाली सब्जियों की मात्रा अधिक न होने के कारण उनका उचित मूल्य नहीं मिल पाता था। इस बात को मद्देनजर रखते हुए क्षेत्र में कार्यरत स्वयं सेवी संस्था राष्ट्रीय जाग्रति संस्थान ने गावं में 10 महिलाओं के एक स्वयं सहायता समूह का गठन किया और उसको जम्भशक्ति स्वयं सहायता समूह नाम दिया। इस समूह की महिलाओं ने नियमित बैठक, नियमित बचत और आपसी लेन देन की प्रक्रिया के उपरांत सामूहिक रूप से सब्जी संग्रहण का कार्य शुरू किया। सब्जी संग्रहण के पश्चात उसे सुखाकर जब बाज़ार में बेचा गया तो इससे समूह सदस्यों को तीन फायदे हुए – दस जगह के स्थान पर एक जगह ज्यादा मात्रा में बेचने योग्य माल, अच्छा भाव तथा किराये एवं समय में बचत।

सामूहिक रूप से उत्पाद का संग्रहण एवं विक्रय करने से समूह को अधिक भाव मिलने के साथ साथ इस बात का भी अंदाजा मिल गया कि किस वस्तु की कितनी मांग है और किस समय उसका अच्छा भाव मिल सकेगा। बाजार कि मांग के अनुरूप समूह कि महिलाओं ने अच्छी क्वालिटी की सब्जियों का संग्रहण एवं उनका प्रसंस्करण कर आकर्षक पैकेजिंग में बेचना शुरू कर दिया जिससे उनकी आमदनी में कई गुना इजाफा हुआ।

वर्तमान में जम्भशक्ति स्वयं सहायता समूह द्वारा संगृहीत सब्जियां कई प्रदर्शनियों में भी बिक्री हेतु उपलब्ध करवाई जा चुकी हैं। समूह की महिलाएं सब्जी संग्रहण एवं बिक्री से प्राप्त आय का हिसाब स्वयं संभाल रही हैं और शादी – त्यौहार के मौके पर अपेक्षित ज्यादा मांग की पूर्ती के हिसाब से पहले से ही तैयारी कर रही हैं तथा भविष्य में अपने उत्पाद की पैकिंग एवं पहचान में और आकर्षण लाने हेतु तकनीकी प्रशिक्षण लेने एवं संसाधन बढ़ाने पर विचार कर रही हैं।

बाह्य सहायता प्राप्त वानिकी परियोजनाओं की प्रगति समीक्षा

भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा देश में वानिकी क्षेत्र में सभी बाह्य सहायता प्राप्त परियोजनाओं की प्रगति समीक्षा बैठक का आयोजन मई 2017 में किया गया। DGF & SS की अध्यक्ष में आयोजित इस बैठक में आसाम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, सिक्किम, उत्तर प्रदेश, त्रिपुरा, ओडिशा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, उत्तराखण्ड एवं राजस्थान में चल रही परियोजनाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा अब तक का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

बैठक की शुरूआत में श्री सौमित्र दास गुप्ता IGF (EAP) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री सिद्धांत दास, DGF & SS, MoEF & CC ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि बाह्य सहायता प्राप्त परियोजनाएं खास संसाधनों की कमी के कारण उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए चलाई जाती हैं, जिनको अन्यथा प्राप्त करना मुश्किल होता है।

इसके पश्चात सभी परियोजनाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी–अपनी परियोजनाओं की उपलब्धियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया। राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना–2 की तरफ से श्री रामकरण खैरवा, उप परियोजना निदेशक (प्रशासन) ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि परियोजना का अंतिम चरण शुरू हो चुका है और आखिर के दो वर्षों में ध्यान Soft Skills Activities तथा आधारभूत संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण में रहेगा।

बैठक का अंत सभी परियोजनाओं की संतोषजनक प्रगति एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ हुआ।

नये संयुक्त परियोजना निदेशक ने कार्यभार ग्रहण किया

श्री आर.पी. गुप्ता (वन संरक्षक) ने मई 2017 में परियोजना निदेशालय में संयुक्त परियोजना निदेशक का कार्यभार संभाल लिया। इससे पूर्व वे वन संरक्षक, मूल्यांकन एवं प्रबोधन, जयपुर के पद पर कार्यरत थे।

उप परियोजना निदेशक (प्रशासन) श्री रामकरण खैरवा के स्थानान्तरण से रिक्त हुए पद का अतिरिक्त कार्यभार श्री देवेन्द्र कुमार भारद्वाज, उप वन संरक्षक एवं मुख्य प्रबंधक (तकनीकी) राजस्थान स्टेट बायोडाइवर्सिटी बोर्ड को सौंपा गया है।

Financial Progress for the period April 2017 to June 2017

Rs. In Lacs.

S.No.	Package / Budget Head	Expenditure upto FY 2016-17	FY 2017-18		Cummulative Expenditure
			BE	Exp. 1st Quarter (April'17 to June'17)	
1	Afforestation	47558.60	6260.95	215.00	47773.60
2	Agro Forestry Activities	40.74	54.74	0.00	40.74
3	Water Conservation Structures	4762.64	852.89	0.00	4762.64
4	Biodiversity Conservation	10227.17	600.02	50.81	10277.98
5	Poverty Alleviation and Livelihood Improvement	450.26	458.50	2.50	452.76
6	Capacity Building, Training & Research	232.23	253.18	0.47	232.70
7	Community Mobilisation	4836.59	547.97	7.90	4844.49
8	Project Management	1831.84	345.70	17.40	1849.24
9	Monitoring & Evaluation	161.76	86.00	0.15	161.91
10	Contractual Personnel for PMU	988.55	190.05	23.09	1011.64
	Total	**71090.38**	**9650.00**	**317.32**	**71407.70**
11	Administrative Cost	578.28	150.00	26.91	605.19
	Grand Total	**71668.66**	**9800.00**	**344.23**	**72012.89**

संपादक मण्डल: संरक्षक आर.के. गोयल, परियोजना निदेशक; संपादक आर.पी. गुप्ता, संयुक्त परियोजना निदेशक; सहायक संपादक देवेन्द्र कुमार भारद्वाज, संजय प्रकाश भादू; संयोजन संयोग मिश्र; साज-सज्जा गिरधारी लाल चौधरी

प्रकाशक : राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना (फेज–2), अरावली भवन, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) 302004, फोन : 0141–5199660